

मानकीकृत सरलतम उच्चारणाधारित लातिनीकरण: भारतीय भाषाओं की लेखनपद्धति को शुद्धिकृत सरलीकृत एवं सहज करने की व्यावहारिक प्रचेष्टा.

Standardized, Lucid and Pronunciation-based Latinization: A Practical Effort to Purify Lucidify and Simplify the Orthography of Indian Languages

सृजन साधुख़ाँ Srijon Sadhukhan

अक्सर हमने ये देखा है कि आम तौर पर लोग हिंदी को टूटी-फूटी लातिन लिपि में लिखते हैं (जिस लिपि में अंग्रेज़ी लिखते हैं) क्योंकि उन्हें ये लगता है की इसका इस्तेमाल बहुत सरल है और उनके रोज़मर्रे का काम झट से हो जाता है. और ये सच भी है. लेकिन बचपन से ही भाषावैज्ञानिक (ज़बान-बोलियों पे पढ़ाई और खोज-ख़बरी करने वाला) और दिमागी तौर पर बहुत ज़्यादा जिज्ञासु (हरदम अनगिनत सवालों के जवाबों को खोजने वाला) होने के मद्देनज़र मैं हमेशा से यही सोचता रहा हूँ की हिंदी-उर्दू को देवनागरी और अरबी दोनों लिपियाँ होते हुए भी अलग से वही अंग्रेज़ी लिपि का क्यों खाली-फोकट में इस्तेमाल करते हैं. मैं अहिन्दी हूँ, सो जनता हूँ की ये सारे हिन्दुस्तानी ज़बानों के लिए अब आम.... फ़ैशन कहूँ या ट्रेन्ड, जो भी हो सो कहिये, हो चुका है.

हाल की बात यह है की इसी साल मैंने माध्यमिक इन्तेहाँ दी थी (जिसे हम सब बोर्ड एक-ज़ाम कहते हैं), मेरा पहला पेपर और हमेशा से अतिप्रिय पेपर हिंदी था (वो मेरा स्कूल कालीन आखिरी हिंदी पेपर था). मजाल ये थी की दस दिन पहले से हिंदी विषय का पारंपरिक परीक्षा-पूर्वकालीन अध्ययन करना शुरू कर दिया, हाथ में दर्द करना शुरू कर दिया. लातिनी (अंग्रेज़ी) लिपि में लिखते लिखते उसमें इतना अभ्यस्त (आदी) हो गया था कि मैं अब फिर से देवनागरी लिपि पे अपना हाथ स्वाभाविक तरीक़े से नहीं चला पा रहा था. क्या करूँ, परीक्षा में अच्छे नंबर लाने हैं, इसलिए मैंने लातिनी लिपि को ही कुछ बदलावों के साथ (परिमार्जित रूप में, कहिये) इस्तेमाल करना शुरू किया, ताकि एक और मुझे जिस्मानी (शारीरिक) तकलीफ़ न हो

(यद्यपि मेरी हिंदी लेखनी या हैण्ड-राइटिंग बहुत सुन्दर है) और दूसरी और हिंदी की वर्तनी-शुद्धता (purity of spelling) रूपी गरिमा को ठेस न पहुँचे (जो दरअसल हिंदी लेखनपद्धति या orthography या writing system की बुनियाद है).

किसी ज़बान (language) या बोली (dialect) को, उसके उच्चारण (pronunciation) के मुताबिक़ लातिन (Latin) लिपि में लिखने की प्रक्रिया (process) को, लातिनीकरण (Latinization) कहते हैं. ये कोई नयी घटना या phenomena नहीं है, सालों से, कहिये सदियों से इसे बढ़ावा मिल रहा है. आज की अंग्रेज़ी वैसी नहीं थी जैसे एक हजार साल पहले थी, पुरानी अंग्रेज़ी रूनी (runic) प्रकार की लिपि में लिखी जाती थी, और तक्ररीबन 800 ईसवी के बाद आइरीय प्रचारकों (Irish missionaries) द्वारा ये प्रचलित हुआ. ये लिपि बदलती भी गयी. इस परिवर्तन से हमें अंग्रेज़ी ज़बान की ज़बानी विकास के बारे में ज्ञात होता है. इस चीज़ (लातिनीकरण) को हम हमारे जैसे हालातों में ढालकर भी सोच सकते हैं, जैसे तुर्की में हुआ था. तुर्क आज़ादी और आधुनिक तुर्क गणतांत्रिक राष्ट्र के गढ़ने के बाद वहाँ के राष्ट्रपिता (गाज़ी) मुस्तफ़ा कमाल आतातुर्क ने लातिनी लिपि का प्रस्ताव रखा था जिससे लोगों के लिए तुर्की ज़बान में लिखित दस्तावेज़ों की पढ़ाई लिखाई में आसानी हो, क्योंकि उस समय में चल रही अरबी लिपि पढ़ाई के मामले में बहुत जटिल थी. लोगों की अनपढ़-गँवारी को मिटाने में ये कारगर सिद्ध हुई. सूत्रों के हवाले से यह जानने को मिलता है कि एक दशक में, करीब उन्नीस सौ पैंतीस (1935) से उन्नीस सौ पैंतालीस (1945) के बीच, पढ़े लिखे लोगों की गिनती करीब दस प्रतिशत (10%) से नब्बे प्रतिशत (90%) तक बढ़ गयी. यही है इस लातिनीकरण के अपनाने के बाद उसकी उद्देश्यपूर्ति या लक्ष्यपूर्ति. इसी मॉडल के आधार पर आज़रबायजान (Azerbaijan) और तुर्कमेनिस्तान में भी लातिनिकरण को प्रभावी तौर पे अपनाया और लागू किया गया. हिंदुस्तान जैसा लातिनी लिपि का निजी भाषाओं में प्रयोगादि क़ज़ाक़िस्तान में भी देखा जाता है. आम लोग, रूसी भासा में इस्तेमाल होने वाली कीरीली लिपि (Cyrillic Script), को अधिकारिक रूप से मानते हैं, पर समाज में साधारणतः लातिनी लिपि का ही प्रचालन और उसी की ही स्वीकृति है.

ये हुई इतिहास ही बात.

अब मुद्दे पे आते हैं. भाषीय स्वतंत्रता को बढ़ावा देना और भाषीय विविधता पर गर्व करना एक हद तक तो सही बैठती है, लेकिन उसपे अमल पाना बहुत ही कठिन कार्य है. बहुत से भारतीय लोग अपनी मातृभाषा में तथा दूसरी भारतीय भाषाओं में लेख या दस्तावेज़ पढ़ नहीं पाते. कारण है उसकी जटिल लिपि से अपरिचितता. इसका कारण हो सकता है, उसका आकार, उसका प्रयोग और तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ आदि. चाहें कितनी भी हमारी सरकारें भारतीय भाषाओं के उत्थानकार्य हेतु भारतवाणी, राजभाषा आदि योजनाओं की संचालना करें, यह भाषा के विकास में कोई योगदान नहीं करता क्योंकि जनमानस में इसका अस्तित्व पर्याप्त नहीं है. हिंदी अब एक लिखित भाषा के रूप में मुख्यधारा में नहीं रही, केवल कुछ बुद्धिजीवियों के बीच ही ये लिखित-पठित स्वरूप विद्यमान है. यही हाल सभी भाषाओं का है. देखने से तो यही लगता है कि इस ज़माने में भारतीय भाषाओं का अध्ययन भारतियों से ज्यादा विदेशी लोग कर रहे हैं. कुछ लोग अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव को इसका ज़िम्मेदार मानते हैं, लेकिन ये कोई वाजिब कारक (factor) साबित नहीं होता.

समस्याओं का समाधान (या कहिये समय की माँग) यही है कि ज़्यादातर लेख-दस्तावेज़ लोगों की आम-प्रचलित बोलियों में लिखी जाये. भाषीय विकास में, *सो कहा* “बनावटी शुद्धिकरण” को एहम ना बनायें. ज़्यादा से ज़्यादा तद्भव (हिंदी के निजी शब्दों) और (बाहरी (या विदेशी) शब्दों को भी) इस्तेमाल करें. अपरिचित संस्कृत शब्दों का ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल ना करें. और दूसरा अगर कोई क़दम बचा है तो वो है लातिनीकरण (क्योंकि लातिन दुनिया की और मुख्यतः भारत में भी सबसे प्रचलित लिपि है).

हम अब इतनी सारी भाषाओं की इतनी सारी लिपियों को अपना बोझ बनाकर नहीं रख सकते. ये सारी लिपियाँ अनर्थक, बेकार और कबाड़ हो चुकी हैं क्योंकि ज़्यादातर लिपियाँ समग्र जनमानस और समाज में इस्तेमाल से बाहर हो गयीं हैं (इनसे संस्कृत और तमिल लिपि अलग हैं क्योंकि बारीकी के साथ ज्यों के त्यों पढ़ा जा सकता है, हिंदी में थोड़ी छूट है लेकिन

मेरा मानना है की इतनी छूट भाषीय लेखनप्रणाली के लिए घातक है तथा हिंदी के जुड़े अक्षर जैसे क्ष त्र क्त क्र इत्यादि पढ़ना लिखना और खासतौर पर सीखना बेहद कठिन है, बंगाली में और असमी में सबसे बुरी स्थिति क्योंकि जो लिखा है और जैसे पढ़ा जाना चाहिए उसमें अंतर अत्यधिक बढ़ गया है किये लिपियाँ व्यावहारिक तौर पर अंग्रेजी से भी ज़्यादा अवैज्ञानिक हो गयी हैं). हिंदी में नुक्तों (नुक़तों) का इस्तेमाल ज़रूरत से बहुत कम है क्योंकि वो बहुत जटिल प्रक्रिया मालूम पड़ती है. यह भी हिंदी की पुरातन गरीमा पे आघात कर रही है. उर्दू लिपि में हिंदी लिपि की समस्यायें तो वैसे नहीं के बराबर हैं लेकिन वो बहुत ही अव्यवस्थित और बे-अनुकूल है. हर लिपि की अलग अलग लेखन व्यवस्था के अलगाव को दूर करके क्यों ना हम एक नयी एकीकृत लिपि का इजाद और सृजन करें, वो भी लातिनी लिपि पे आधारित. एक यूनिफ़ॉर्म राष्ट्रीयव्यावहारिक लिपि तैयार करें. तो इससे अलग से अलग अलग भाषाओं की लेखनपद्धति को सीखने में अपनी माथापच्ची कम से कमतर कर सकते हैं.हमें ये लक्ष्य अपनाना चाहिए की एक भाषीय सम्प्रदाय के लोगों को अपनी मातृभाषा में संवाद करने के लिए प्रस्तुत और सक्षम कर सकें. इसी में भारतीयता जीवित है. इससे सबसे ज़्यादा लाभ गवेषकों (Researchers) मुख्यतः वैज्ञानिकों को बहुत लाभ मिलेगा. वे हरवक्त अंग्रेजी वैज्ञानिक शब्दों का इस्तेमाल करते हैं.

मैंने लोगों से इस बारे में बातचीत भी की, एक सम्माननीया विद्वज्जना ने अंग्रेजी का हवाला देते हुए विरोधी जवाब दिया कि क्योंकि अंग्रेजी एक funny ज़बान है (क्योंकि उसमें वर्णीय व्यवस्थापना पर ज़्यादा जोर नहीं दिया जाता तथा अतिरिक्त उच्चारण पाने हेतु द्विवार्णिक (diagraphs), त्रिवार्णिक (triagraphs), चतुर्वार्णिक (tetragraphs) जैसे ph,ough, elf इत्यादि का इस्तेमाल किया जाता है). उन्हें मेरा एक ही जवाब है, हर ज़बान अंग्रेजी या यूरोपीय या हिंदी या तमिल नहीं होती. हर एक भाषा को उसके मुताबिक सँभालना पड़ता है. दूसरी बात, भाषीय विविधता पर गर्व करना अलग बात है, और उनका संरक्षण (preservation) अलग. हम भाषाओं के प्रति अवहेलना की नीति हरदम नहीं अपना सकते, इससे इनके सम्मान को चोट नहीं, इनकी मर्यादा को चोट पहुँचती है. और इसे ही, एक तरुण भाषावैज्ञानिक के

नज़रिये से कहूँ तो, राष्ट्रद्वेष कहना चाहिए. भाषा नहीं है तो संस्कृति नहीं, और संस्कृति नहीं तो अस्तित्व नहीं. हमें पहले इलाज करना है कि बिन इलाज के ही काम चलाना है.

भाषा को कैसे संरक्षित रखना है उसका कोई एकल पद्धति नहीं, वो लोगों की सृजनात्मकता पर निर्भर करता है. उसपे कोई भी प्रकार की लिपि निर्भर नहीं करता, बशर्ते इसके कि वह उस भाषा के लिए ढाँचागत, व्यवहारिक तौर पर, उच्चारण के तौर पर, शब्द भंडार (vocabulary) के मद्देनज़र हानिकारक ना हो.

एक नज़र फ़ारसी लिपि पे-

- दो लिपियाँ (ईरान-अफ़ग़ानिस्तान में अरबी-फ़ारसी व ताजिकिस्तान में कीरीली)
- 3 देश में क्षेत्रीय फैलाव
- अरबी-फ़ारसी लिपि इस्लामिकीकरण का प्रभाव, परन्तु उच्चारण प्रणाली पे घातक सिद्ध, फ़ारसी में प्रयुक्त तब्दवों पर इस लिपि का बुरा असर
- कीरीली लिपि (Cyrillic) साम्यवादी शासन (Communist Rule) की देन. अभी भी बरकरार.

इसी आधार पर मैं यही निष्कर्ष निकालता हूँ कि लातिनी लिपि ही अब के समय के मुताबिक वही एकमात्र उपयुक्त लिपि है जिससे सारे भारतीय भाषीय सम्प्रदाय के लोग आपस में जुड़ सकते हैं, बशर्ते इसके कि वह मानकीकृत, परिमार्जित (modified) एवम् आवाम हेतु सरलीकृत हो।